25

अन्यजातियों में पौलुस के मिशनरी दौरे

45-58 ई. (प्रेरितों 13-21:26)

I. पहला दौरा (प्रेरितों 13, 14)

1. मिशनरी जोश। –एक साल तक बरनबास और शाऊल ने अन्ताकिया में इकट्ठे काम किया था। कलीसिया संज्या में काफी बढ़ गई थी और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि वह आत्मिकता में बढ़ी थी। इसकी उदारता अपने ज़रूरतमंद यहूदी भाइयों के लिए चंदा लेकर बरनबास और शाऊल को यरूशलेम में भेजने में देखी गई थी (प्रेरितों 11:27-30)। इसमें अच्छे शिक्षक थे (प्रेरितों 13:1) जिनमें बरनबास का नाम सबसे पहले और शाऊल का नाम सबसे बाद आता है। सुसमाचार के व्यापक काम का बोझ उनके मनों पर लगता है; ज्योंकि "जब वे उपवास सहित प्रभु की उपासना कर रहे थे, तो पवित्र आत्मा ने कहा; मेरे निमिज़ बरनबास और शाऊल को उस काम के लिए अलग करो, जिसके लिए मैंने उन्हें बुलाया है।"[1] सताव के बाहरी बल से यरूशलेम और पवित्र आत्मा की अंदरूनी उज़ेजना से अन्ताकिया एक मिशनरी केन्द्र बन गया।

2. कुप्रुस में जाना। –प्रमुख देश और बरनबास का नगर होने के कारण कुप्रुस को सबसे पहला क्षेत्र चुना गया। यूहन्ना मरकुस, जो यरूशलेम से उनके साथ वापस आया था (प्रेरितों 12:25), इन मिशनरियों के साथ हो लिया। प्राचीन यूनानी राजधानी सलमीस में, उस टापू के पूर्वी क्षेत्र में प्रचार करते हुए वे पश्चिमी छोर में स्थित रोमी राजधानी पाफुस तक चले गए। यहां रोमी हाकिम सरगियुस पौलुस प्रभु का विश्वासी बन गया। उसके मन परिवर्तन का बार-यीशु नामक एक यहूदी जादूगर ने विरोध किया। इस संकट में शाऊल अगुआई करता है। उसने ईश्वरीय प्रेरणा और प्रेरिताई की सामर्थ से अवगत, उस कपटी को डांट कर उसके कपट पर परमेश्वर के न्याय के रूप में उसके तुरन्त अंधा होने की घोषणा की। इसी समय से शाऊल को पौलुस कहा जाने लगा और वह स्वीकृत अगुआ बन गया।

3. एशिया माइनर का दौरा। –इसके बाद इन मिशनरियों ने एशिया माइनर की ओर रुख किया। कई साल तक पौलुस अपने गृह राज्य किलिकिया में रहा था। अब जिन इलाकों में वह गया वे किलिकिया के उज़र और पश्चिम में स्थित थे। पिरगा की बन्दरगाह में, यूहन्ना मरकुस काम छोड़कर यरूशलेम की ओर मुड़ गया। पौलुस और बरनबास "नदियों

के जोखिमों में; डाकुओं के जोखिमों में; अपने जातिवालों से जोखिमों में; अन्यजातियों से जोखिमों में'' घिरे हुए (2 कुरिं. 11:26) ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी इलाकों से होकर आगे बढ़ते रहे। वे पिसिदिया के अन्ताकिया, इकुनियुम, लुस्त्रा और दिरबे में गए और उसी रास्ते से होते हुए वापस आए। पौलुस ने अन्ताकिया के आराधनालय में अपना पहला विस्तृत प्रवचन दिया। यहूदियों के समूह द्वारा ठुकराए जाने पर, वह अन्यजातियों की ओर मुड़ गया। ''पहले तो यहूदी, फिर यूनानी के लिए'' (रोमि. 1:16) का क्रम ही हर जगह अपनाया गया। हर जगह उनके काम में बहुत से लोगों का मन परिवर्तन हुआ और कई कष्ट भी झेलने पड़े। लुस्त्रा में जहां पौलुस ने एक लंगड़े आदमी को चंगा किया था, पहले तो मूर्तिपूजक अन्धविश्वासियों ने उन्हें देवता जानकर पूजा और फिर इकुनियुम से आए यहूदियों के बहकाने पर पौलुस को पथराव से अधमरा कर छोड़ दिया। एक नये संसार को पा लेने वाले खोजियों की तरह, आनन्द से अन्ताकिया में लौटकर उन्होंने आकर उस कलीसिया को खबर दी जिसने उन्हें भेजा था।

II. दूसरा दौरा (प्रेरितों 16-18:22)

1. अन्तराल; यरूशलेम की सभा। -नई परिस्थितियों से नये सवाल खड़े हो जाते हैं। कलीसिया अपने यहूदी चरण से बढ़कर तेज़ी से विकास कर रही है। परन्तु यहूदी मसीही सुसमाचार की शानदार विश्वव्यापकता तक उठने में धीमे थे। सुसमाचार की आज्ञा मानने से अन्यजातियों के कलीसिया में प्रवेश करने का प्रश्न कुरनेलियुस की घटना से हल हो गया था। परन्तु ज़्या उन्हें खतना करवाकर यहूदी नहीं बनना चाहिए? ज़्या मसीहियत यहूदी मत का एक नया और संशोधित संस्करण नहीं है? इस प्रकार यरूशलेम से अन्ताकिया में आने वाले कुछ लोगों ने झगड़ा किया। प्रश्न गंभीर था ज़्योंकि इससे अन्ताकिया की कलीसिया की शांति भंग होने का खतरा और मिशनरियों के भावी परिश्रम का सज़्बन्ध भी था। इसलिए पौलुस और बरनबास को इस प्रश्न के साथ यरूशलेम में भेजा गया। एक सभा में जिसकी प्रधानगी याकूब ने की और जिसमें पतरस, पौलुस और बरनबास ने भाग लिया, इस प्रश्न का निर्णय स्वतन्त्रता के पक्ष में लिया गया। यदि इसका निर्णय विपरीत रूप में लिया गया होता तो मसीहियत पालने में ही मर गई होती।

2. पौलुस और बरनबास में झगड़ा। -सभा के थोड़ी देर बाद, पौलुस ने बरनबास को सुझाव दिया कि वे उन कलीसियाओं में जिन्हें उन्होंने शुरू किया था फिर जाएं। बरनबास ने अपने भतीजे मरकुस को दोबारा साथ ले जाना चाहा (कुलु. 4:10), परन्तु पौलुस को उस पर भरोसा नहीं था ज़्योंकि वह पहले उन्हें छोड़कर चला गया था। झगड़ा इतना बढ़ गया कि पौलुस और बरनबास अलग हो गए। यह जानना सुखद है कि मरकुस ने बाद में पौलुस का भरोसा फिर से हासिल कर लिया (2 तीमु. 4:11)।

3. दूसरी बार एशिया माइनर में जाना। -सभा से पौलुस और बरनबास की वापसी के समय, सीलास उनके साथ था। पौलुस ने उसे अपने साथ ले जाने के लिए चुना था और योजना के अनुसार सूरिया और किलिकिया से होते हुए, वह कलीसियाओं में गया। लुस्त्रा में

उसे तीमुथियुस नामक एक नौजवान चेला मिला। उसका पिता यूनानी था लेकिन उसका पालन-पोषण उसकी यहूदिन माता, यूनीके और उसकी नानी लोईस द्वारा धार्मिक रीति से किया गया था (2 तीमु. 1:5)। नि:संदेह वह पौलुस के पहले दौरे के समय बना मसीही और लुस्त्रा में उस पर आने वाले कष्टों का गवाह था। पौलुस के स्वभाव का सबसे सुन्दर गुण त्यागपूर्ण परिश्रम के लिए नौजवानों को अपने साथ जोड़ने की क्षमता थी; और तब से ही तीमुथियुस पौलुस का सबसे नजदीकी सहकर्मी बन गया।

परन्तु पौलुस की योजनाएं पहले से स्थापित कलीसियाओं में फिर से जाने से कहीं अधिक थीं; इसलिए उसने फ्रुगिया और गलतिया में नये झण्डे गाड़ने पर ज़ोर दिया। परन्तु परमेश्वर की योजनाएं उसकी योजनाओं से भी बड़ी थीं; ज़्योंकि उसे दायें और बाएं सुरक्षित करके उसने त्रोआस में भेज दिया। वहां उसे एक दर्शन मिला कि मकिदुनिया से आया एक आदमी कह रहा है, ''आ और *हमारी* सहायता कर।''[2] गर्भकाल था जब पौलुस त्रोआस में था। उसके पीछे शज़्तिशाली अतीत वाला एशिया; आगे दक्षिणी किनारे के साथ, सबसे शज़्तिशाली वर्तमान रूप रोम; जबकि उज़र और पश्चिम में जंगली लोग हैं जिनकी देहों में शज़्तिशाली भविष्य है। ''अपनी बंदूकों का मुंह यूरोप की ओर करो। भविष्य पर विजय पा लो।''

4. यूरोप में सुसमाचार बोया गया; फिलिप्पी में इसकी शुरुआत। -जैसा कि आप बीती ''हम'' से पता चलता है, त्रोआस में लूका पौलुस के साथ मिल गया। समुद्री मार्ग से निआपोलिस की ओर जाते हुए ये मिशनरी उस जिले के प्रमुख नगर फिलिप्पी की ओर चले गए। फिलिप्पी व्यावसायिक न होकर एक सैनिक नगर था, जिस कारण इसमें यहूदी कम थे और यहां कोई आराधनालय भी नहीं था। परन्तु नदी के किनारे शनिवार को स्त्रियों की एक प्रार्थना सभा हो रही थी, जिसमें पौलुस भी चला गया। उस प्रार्थना सभा में मसीहियत ने यूरोप में पुनर्जीवन का अपना काम आरज़्ज़ किया और लुदिया नामक एक व्यापारी महिला यहां की पहली मसीही बनी। शीघ्र ही दुष्टात्मा से ग्रस्त एक गुलाम लड़की की चीखों से उन्हें पीछे मुड़ना पड़ा। लड़की में से दुष्टात्मा निकालने और उसके मालिकों की कमाई छिन जाने के कारण, पौलुस और सीलास को गलत परज़्पराएं शुरू करने का आरोप लगाकर कोड़े मारे गए और जेल में डाल दिया गया। रात को उनके गीतों और भूकंप से जिससे जेल के दरवाजे अपने आप खुल गए, उस मूर्तिपूजक दारोगे को उनके आगे झुकना पड़ा; और सुबह होने से पहले वह और उसका सारा घराना आनन्द से बपतिस्मा प्राप्त परमेश्वर में विश्वासी बन चुके थे।

5. फिलिप्पी से अथेने तक। -लूका और शायद तिमुथियुस को नई बनी कलीसिया की रखवाली के लिए छोड़कर, वे काले सागर और अद्रिया समुद्र को जोड़ने वाले प्रमुख सैनिक मार्ग *इग्नेशिया के रास्ते* पश्चिम की ओर चले गए। अज़्फिपोलिस और अप्पोलोनिया से निकलकर वे मकिदुनिया के महानगर थिस्सलुनीके में आए। यहां पौलुस ''अपनी रीति के अनुसार''[3] कई सज़्त तक आराधनालय में मसीह का प्रचार करता रहा। कुछ यहूदियों और बहुत से यूनानियों ने विश्वास किया परन्तु विश्वास न करने वाले यहूदियों ने अपनी आदत के अनुसार सताव का एक तूफ़ान खड़ा कर दिया जिससे पहले ये मिशनरी बिरिया में चले गए। थिस्सलुनीके के लोगों से भले, बिरिया के यहूदी हर रोज पवित्र शास्त्र में से ढूंढ़ते थे।

जिस कारण बहुत से यहूदियों और यूनानियों ने मसीह को ग्रहण किया। एक भले काम का विरोध करते हुए, थिस्सलुनीके के यहूदी बिरिया में पौलुस के पीछे आ गए। पौलुस अथेने के लिए समुद्री मार्ग से जहाज़ पर रवाना हो गया।

6. पौलुस अथेने में। –मसीही व्यज़्ति के लिए अथेने का उतना महत्व नहीं था जितना इतिहास के लिए। तो भी प्राचीन अथेने की शान देखना उसकी अपेक्षा क्रूस की महिमा से पहली बार होने का क्षण बहुत ही दिलचस्प था। पौलुस ने सीलास और तीमुथियुस को उससे अथेने में मिलने का संदेश भेजा था। जबकि अपने आस-पास बड़ी-बड़ी मूर्तियां देखकर वह परेशान हो गया और उसने अगोरा अर्थात नगर के सावर्जनिक सभा स्थल या चौक में और यहूदी आराधनालय में एक नये विश्वास की घोषणा कर दी। कुछ दार्शनिकों की जिज्ञासा इतनी बढ़ गई कि उन्होंने पौलुस को अरियुपगुस में बुलाया, जहां अथेने की अति प्रतिष्ठित और विद्वान सभा बैठती थी। पौलुस ने उस जगह पर जो बहुत ऐतिहासिक थी, अपने सबसे शानदार प्रवचनों में से एक दिया, जो हमें मिले उसके प्रवचनों में से दूसरा है। पहले प्रवचन में (प्रेरितों 13:16-41), जो अपने कौमी इतिहास और शानदार भविष्यवाणियों पर घमण्ड करने वाले यहूदियों में अन्ताकिया के आराधनालय में सुनाया गया था, चौंकाने वाले अंतर हैं और यह दूसरा प्रवचन, सबसे अद्‌भुत कलाकारों की उपस्थिति में कुलीन यूनानियों के सामने अथेने के अरियुपगुस में दिया गया। लेकिन तर्क और उसका ढंग अलग होने के बावजूद, अन्त एक जैसा ही था, अर्थात प्रचार मसीह और उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने, मसीह और पुनरुत्थान का ही था। परन्तु अथेने के सज्य लोग भी यहूदियों द्वारा अपनी परज़्पराओं की तरह ही अपनी फिलॉस्फियों में जकड़े हुए थे। परन्तु कुछ लोगों को मसीह के लिए जीत लिया गया था, जिनमें से दियुनुसियुस नामक अरियुपगुस का एक न्यायी और दमरिस नामक एक महिला थी। प्रेरितों 17:15, 16 और 1 थिस्स. 3:1 की तुलना करने से स्पष्ट होता है कि तीमुथियुस अथेने में पौलुस के साथ मिल गया और उसे थिस्सलुनीके में भेज दिया गया था। अथेने उन कुछेक नगरों में से एक था जहां पौलुस ने सताव नहीं सहा था; परन्तु यह क्षेत्र फलहीन ही रहा और शीघ्र ही वह कुरिन्थुस में चला गया।

7. कुरिन्थुस में पौलुस का लज़्बा प्रवास। –पौलुस के समय में अथेने आज का बोस्टन और कुरिन्थुस यूनान का न्यूयॉर्क था। इस बड़े व्यापारिक महानगर में पौलुस भय के साथ और थरथराता हुआ गया (1 कुरिं. 2:3)। अथेने में अपनी असफलता से वह विनम्र हो गया था। न उसके पास पैसा था और न कोई साथी। अपनी दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उसे तज़्बू बनाने का अपना काम मिल गया परन्तु पौलुस मित्र ढूंढ़ने या बनाने में अधिक समय नहीं लगाता था। उसे अपने साथी व्यवसायियों में अपने जैसे ही अज़्विला और प्रिस्किल्ला मिल गए, जो पहले से चेले नहीं थे पर शीघ्र ही चेले बन गए। सप्ताह भर उनके साथ काम करते हुए, वह सज़्त के दिन आराधनालय में प्रचार करता था। फिलिप्पी से चंदा लेकर सीलास और तीमुथियुस के आने से, उसका बोझ हल्का हो गया और डेढ़ वर्ष तक उसने काम के लिए अपनी पूरी शज़्ति लगा दी (*तु.* प्रेरितों 18:5, 9, 10; फिलि. 4:15)। तीमुथियुस के आने के शीघ्र बाद उसने थिस्सलुनीकियों के नाम पहली पत्री (1

थिस्स. 3:6) और उसके कुछ देर बाद दूसरी पत्री लिखी। ये हमारे पास पौलुस की आरज़िभक पत्रियां हैं।

8. अन्ताकिया में वापसी। –अज़्विला और प्रिस्किल्ला के साथ कुरिन्थुस के इस्थमुस से किंख्रिया को जाकर, पौलुस इफिसुस में जल मार्ग से गया। यहां आराधनालय में उसका प्रचार सुनने वालों को इतना अच्छा लगा कि उन्होंने उससे उनके पास रहने की इच्छा की; परन्तु वापस जाने की प्रतिज्ञा के कारण उसे कैसरिया और वहां से अन्ताकिया में जाने की जल्दी थी। इस तरह पौलुस का दूसरा और लज़्बा दौरा खत्म होता है। अब ध्यान यूरोप की ओर हो रहा है और अंत में रोम में केन्द्रित हो जाएगा।

III. तीसरा दौरा
(प्रेरितों 18:23-21:26)

1. इफिसुस में पौलुस के तीन वर्ष। –अन्ताकिया में कुछ समय बिताने के बाद, पौलुस ने महान मिशनरी कलीसिया को अंतिम विदाई दी। उसका अगला धावा (हमला) इफिसुस में होना था। यह उसके तीसरे दौरे में दिलचस्पी का केन्द्र था। इसका चुनाव सही था; जितना महत्व सूरिया के लिए अन्ताकिया का, यूनान के लिए रोम और इटली का और पश्चिम के लिए रोम का था, उतना ही महत्व पश्चिमी एशिया माइनर के व्यस्त जीवन के लिए इफिसुस का था। इफिसुस जाते समय मार्ग में, पौलुस गलातिया और फ्रुगिया जाने वाले पिछले मार्ग से जल्दी से गया। यह याद रखा जाएगा कि कुरिन्थुस से अन्ताकिया की वापसी जलयात्रा में उसने बहुत पहले इफिसुस में लोगों की नज़्ज़ पहचानकर अज़्विल्ला और प्रिस्किल्ला को वहां छोड़ा था। उसकी अनुपस्थिति में भी तैयारी का काम चल रहा था। सिकंदरिया से अपुल्लोस नामक एक विद्वान यहूदी इफिसुस में आया था, जो बड़ी सामर्थ से यूहन्ना के बपतिस्मे का प्रचार करता था। अज़्विल्ला और प्रिस्किल्ला ने उसे सुसमाचार और भी अच्छी तरह से समझाया। फिर अपुल्लोस कुरिन्थुस से आगे चला गया और उसने उस काम को आगे बढ़ाया जो पौलुस ने इतनी सफलता से आरज़्भ किया था (तु. प्रेरितों 18:27; 1 कुरिं. 3:4-7)। इफिसुस में आने के बाद पौलुस तीन महीने तक आराधनालय में प्रचार करता रहा। अन्त में वह यहूदियों से अलग होकर मसीही लोगों के लिए एक अलग समाज बनाने को मजबूर हो गया। दो साल तक वह तरन्नुस की पाठशाला में हर रोज प्रचार करता रहा, जिससे एशिया के सब भागों से आने वाले बहुत से यहूदी और यूनानी लोगों तक वचन पहुंचा। पौलुस के प्रचार का इतना असर हुआ कि डायना देवी की सोने की मूर्तियों का व्यवसाय खत्म हो गया। सुनारों के एक दल ने पौलुस का जीना दूभर कर दिया। इफिसुस में अपने लज़्बे प्रवास के दौरान पौलुस कुरिन्थुस में भी गया होगा (2 कुरिं. 12:14; 13:1)। उसने कुरिन्थियों के नाम पहली पत्री भी लिखी (*तु.* 1 कुरिं. 16:5-9; प्रेरितों 19:20, 21; 20:1)। उन्होंने भी एक पत्र लिखा था (1 कुरिं. 7:1), और उसने उन्हें एक पत्र लिखा (1 कुरिं. 5:9) जिन में से हमारे पास कोई नहीं है।

2. मकिदुनिया और अखया का दूसरा दौरा। –एक बार फिर एजियन सागर पार

करके पौलुस ने दूसरा यूरोपीय दौरा किया, जिसकी विस्तृत जानकारी बहुत कम मिलती है। 2 कुरिं. 1:8-10 और 2:12, 13 की प्रेरितों 20:2 से तुलना करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि कुरिन्थियों की दूसरी पत्री इस यात्रा के दौरान मकिदुनिया जाते समय ही लिखी गई थी। कुरिन्थुस में पहुंचकर वह तीन महीने वहां रहा। उस दौरान उसने रोमियों के नाम पत्री लिखी (तु. रोमि. 15:25, 26; प्रेरितों 20:3, 4; 24:17) जिसे सम्भवत: किंख्रिया की रहने वाली फीबे के हाथ भेजा (रोमियों 16:1)। इस तीसरे दौरे के दौरान ही कहीं उसने कुरिन्थुस में या इफिसुस में आरम्भ में गलतियों की पत्री भी लिखी होगी।

3. चंदा। -बड़े लम्बे समय से पौलुस की इच्छा यहूदियों और अन्यजातियों के बीच की दीवार को टूटते हुए देखना था। यह उसका मुख्य लक्ष्य था। इसके लिए उसने अपना महान जीवन दे दिया। इस उद्देश्य के लिए एक साधन जो उसने लगाया वह चंदा था, जो उसने अन्यजातियों में जाते समय, यरूशलेम के निर्धन यहूदी भाइयों के लिए इस दौरे पर लिया। कई छोटे-छोटे पदों के अलावा, दूसरा कुरिन्थियों का पूरा आठवां और नौवां अध्याय इसी से सम्बन्धित है। यह चंदा गलातिया, मकिदुनिया, और अखया में (तु. 1 कुरिं. 16:1-3; गला. 2:10; रोमि. 15:25, 26; प्रेरितों 24:17); सप्ताह के पहले दिन लिया गया था (1 कुरिं. 16:1); और व्यक्तिगत अपीलों या पत्र के अलावा उसने तीतुस और अन्यों को चंदा इकट्ठा करने और आगे देने के लिए नियुक्त किया (2 कुरिं. 8:6, 18, 23; 1 कुरिं. 16:3)।

4. वापसी जल यात्रा। -पौलुस ने जल मार्ग से कुरिन्थुस से सूरिया को सीधे जाने की योजना बनाई थी; परन्तु यहूदियों के किसी षड्यन्त्र के कारण उसे मकिदुनिया से होकर जाना पड़ा। मकिदुनिया में उसे पुराने और नये मित्रों की अच्छी संगति मिल गई (प्रेरितों 20:4-6), जिनमें तीमुथियुस और लूका भी थे। लूका तो शायद वहां पहली बार आने के समय से ही फिलिप्पी में था (प्रेरितों 16:10, 13, 40; 20:6 में ''वे'' और ''हम'' के इस्तेमाल की तुलना करें)। इन लोगों ने एक सप्ताह त्रोआस में बिताया और रोटी तोड़ने के लिए सप्ताह के पहले दिन इकट्ठा होने के लिए आने वाले चेलों से मिले (प्रेरितों 20:7)। यह पद महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें बताया गया है कि (1) चेले किसी दिन को मानते थे; (2) वे इसे कैसे मानते थे। यहीं पर पौलुस ने यूतखुस को जो पौलुस के वचन सुनाते समय खिड़की से गिरकर मर गया था, ज़िंदा किया था। पिन्तेकुस्त तक यरूशलेम में पहुंचने की जल्दी के कारण पौलुस इफिसुस में नहीं रुका परन्तु उसने इफिसुस की कलीसिया के ऐल्डरों को मिलेतुस में बुलाकर उनसे मुलाकात की, जहां उसने उन्हें अपने सबसे सुन्दर सन्देशों में से एक संदेश दिया। सुसमाचार के तेजी से फैलने का यह एक दिलचस्प उदाहरण है कि वे जहां भी गए वहां उन्हें चेले मिल गए चाहे वह त्रोआस, मिलेतुस, सूर, पतुलिमयिस, जहां समुद्री यात्रा खत्म होती थी या चाहे कैसरिया में हो। यहां हमें हमारा पुराना मित्र फिलिप्पुस मिलता है (तु. प्रेरितों 8:40), जिसकी पांच बेटियां थीं और वे परमेश्वर की प्रेरणा पाई हुई शिक्षक थीं। सूर और कैसरिया में दोनों जगह पौलुस को यरूशलेम में उस पर आने वाले खतरों की पहले से ही चेतावनी दे दी गई; परन्तु अन्यजातियों की ओर से यहूदियों के लिए

यरूशलेम में वह मेल बलि जिसे वह चार साल से इकट्ठा कर रहा था, ले जाने से कोई चीज़ न रोक पाई।

5. यरूशलेम में पौलुस का स्वागत। –अब पौलुस के मन परिवर्तन को बीस वर्ष बीत चुके हैं। बारह वर्ष तक वह बड़े अन्यजाति केन्द्रों में सुसमाचार को बोने में व्यस्त था। दो या तीन बार वह जल्दी में यरूशलेम गया था। 12 साल बाद टाइटस[4] ने इसकी दीवारों को गिरा देना था। पौलुस एक बार फिर आता है; इस बार वह दोहरी भेंट अर्थात अन्यजाति मसीहियों का चंदा और परमेश्वर के अनुग्रह का सुसमाचार जिसने दान देने के लिए उत्साहित किया, लेकर आता है। वे उसे कैसे ग्रहण करेंगे ? याकूब के अधीन यरूशलेम की कलीसिया के अगुओं ने उसका गर्मजोशी से स्वागत किया। परन्तु यहां भी उसे बदनामी ही मिली। पूर्वधारणा को निकालने के लिए वह याकूब की सलाह लेता है और एक मन्नत के साथ जुड़ी कुछ रीतियों को पूरा करता है। लूका हमें यह नहीं बताता कि कलीसिया वहां पर कैसे आगे बढ़ी या अविश्वासी यहूदियों के साथ असफल हो गई और शीघ्र ही पौलुस को मन्दिर में वैसे ही एक हुजूम ने जैसे हुजूम की उसने स्तिफनुस के विरुद्ध अगुआई की थी, पकड़ लिया।

पाद टिप्पणियां

[1]प्रेरितों 13:2. [2]प्रेरितों 16:9. [3]प्रेरितों 17:2. [4]टाइटस ज़्लेवियुस वैस्पेसियनुस एक रोमी सम्राट था।